षोडशी त्रिपुर सुन्दरी

महालक्ष्मी पूजन साधना

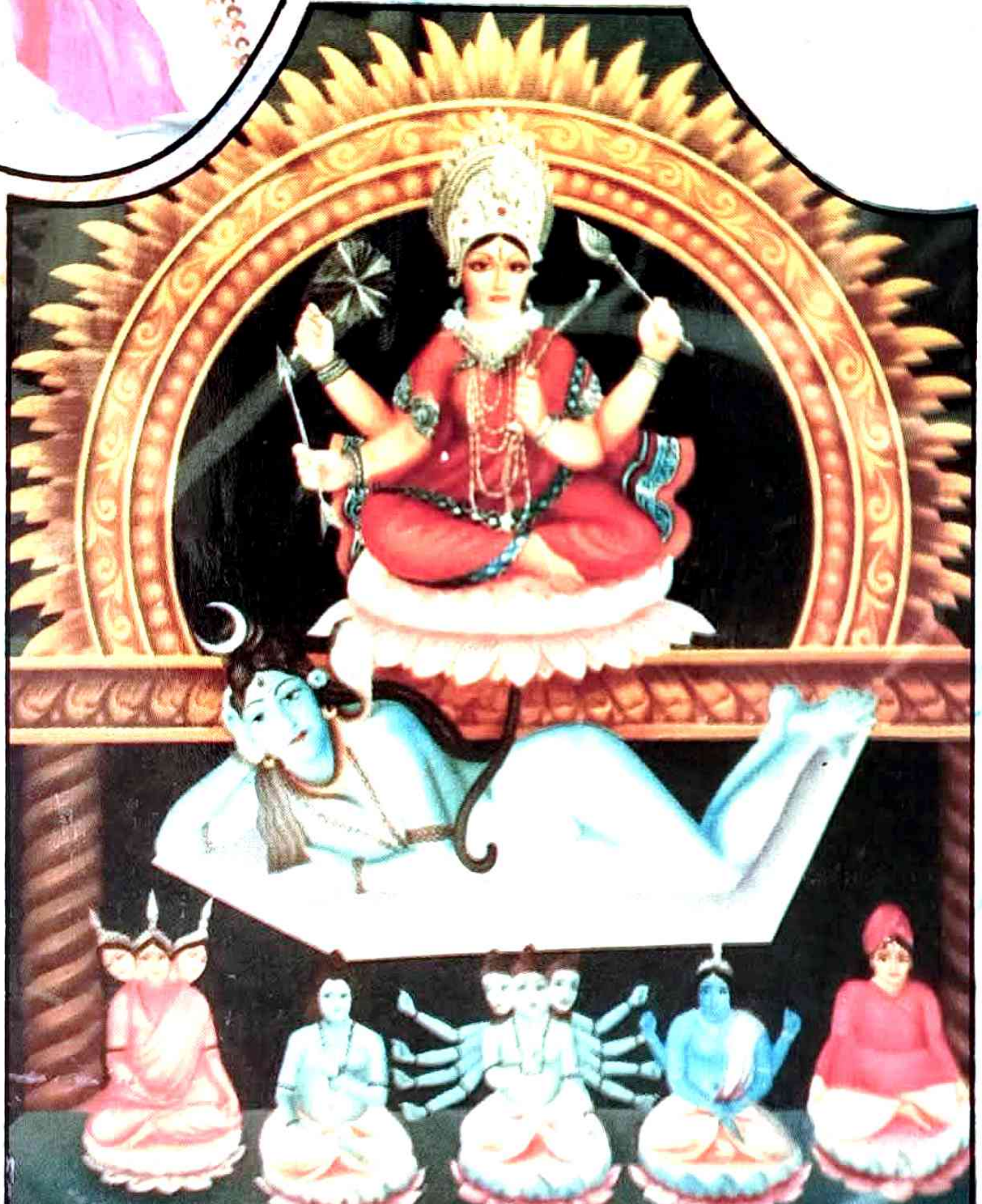

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

Download Book ~ https://www.hindibook.in

झीनी झीनी झरत फुहार

पूज्य गुरुदेव डॉ0 नारायण दत्त श्रीमाली जी की पावन वाणी में सारगर्भित दुर्लभ ऑडियो कैसेट्स

गुरु-शिष्य

- गुरु गति पार लगावे
- गुरुर्बिना गतिर्नास्ति
- गुरु हमारो गौत्र है
- सांस-सांस में गुरु बसे
- मैं खो गया, तुम भी खो जाओ

ध्यान एवं योग

- ध्यान योग
- कुण्डलिनी योग
- ध्यान धारणा और समाधि
- समाधि के सात द्वार
- कुण्डलिनी नाद ब्रह्म

प्रेम

- प्रेम गली अति सांकरी
- प्रेम धार तलवार की
- अकथ कहानी प्रीत की
- प्यार के घुंघरुओं की खनक
- सूली ऊपर सेज पिया की

साधनाएं

- विशेष लामा मंत्र
- अमोघ साबर साधनाएं
- बगलामुखी प्रयोग
- ॐ मणि पद्मे हुं
- विश्व की श्रेष्ठतम साधनाएं

अप्सरा सम्बन्धी प्रयोग

- नाभिदर्शना अप्सरा प्रयोग
- षोडश अप्सरा प्रयोग
- पुष्पदेहा अप्सरा प्रयोग
- स्वर्ण देहा अप्सरा प्रयोग भाग - 1
- स्वर्ण देहा अप्सरा प्रयोग भाग - 2

स्तोत्र एवं स्तवन

- निखिलेश्वरानन्द स्तवन
- प्रात:कालीन गुंजरित वेद ध्वनि
- गुरु गीता
- गुरुमुख स्तोत्र
- दैनिक साधना विधि

✤ आपके लिए प्रत्येक पैकेट में पांच-पांच कैसेट्स हैं, निर्दोष, शुद्ध, पवित्र एवं नवीन टेक्नोलॉजी से संचयित। ✤ एक पैकेट में पांच कैसेट्स की न्यौछावर 30 X 5 = 150/- होती है, परन्तु एक कैसेट पर 5/- की छूट की दर से 125/- में दिया जायेगा। ✤ इसके लिए आदेश के साथ धनराशि ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से अग्रिम भेजें। ✤ डाक व्यय अतिरिक्त।

: सम्पर्क :

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7196700

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज0), फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

Download Book ~ https://www.hindibook.in

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी

महालक्ष्मी पूजन साधना

आशीर्वाद

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

एस-सीरिज

Download Book ~ https://www.hindibook.in

© मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

संकलन एवं सम्पादन

श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली

प्रकाशक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - ३४२ ००१ **(राज.)**

फोन : 0291-432209, फैक्स : 0291-432010

द्वितीय मुद्रण	:	महाप्रयाण दिवस 1999
मूल्य	:	20 15/- रुपये मात्र
मुद्रक	:	आर.एस. ऑफसेट प्रिंटर्स, B-103/4, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1 नई दिल्ली - 28

शास्त्रों में वर्णित षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना पद्धति को स्वयं अपना कर पूर्ण इच्छित लाभ प्राप्त करने के पश्चात् सम्पादक ने सर्वजन हित की भावना से प्रेरित हो, समस्त पूजन पद्धतियों के सारभूत तथ्य को पुस्तकाकार रूप में प्रस्तुत किया है। लेखक के विचार किसी भी धर्म, सम्प्रदाय अथवा सीमा द्वारा बद्ध नहीं किए जा सकते, उसके विचारों की गति स्वतंत्र होती है; अतः इस पुस्तक में प्रकाशित लेखन सामग्री पर किसी भी प्रकार की आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी।

यदि दुर्भाग्यवश इस पुस्तक के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का वाद-विवाद हो, तो ऐसी स्थिति में जोधपुर (राजस्थान) न्यायालय ही मान्य होगा। इस पुस्तक के किसी भी अंश को प्रकाशित करने से पूर्व '**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**' द्वारा लिखित अनुमति लेना आवश्यक है।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

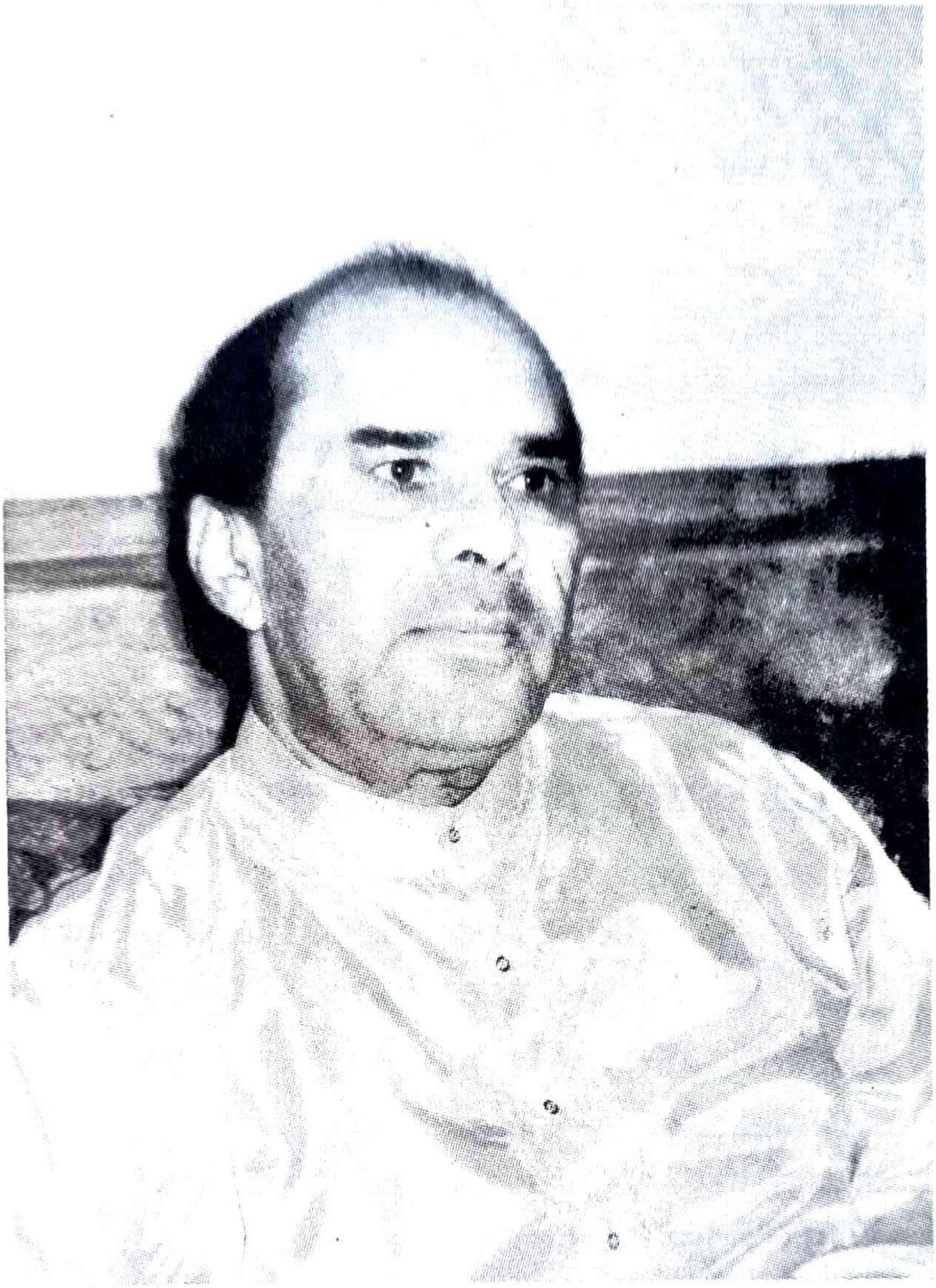

पूज्य गुरुदेव

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

Download Book ~ https://www.hindibook.in

अनुक्रम

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी	०६
श्री विद्या के त्रिविध रूप	१०
षोडशी स्वरूप की प्रतीकात्मकता	११
महालक्ष्मी	१७
महालक्ष्मी पूजन	२१
गणपति पूजन	२३
गुरु पूजन	२४
आवरण पूजा	३६
श्री लक्ष्मी स्तोत्रम्	४३
श्री महालक्ष्म्यष्टक स्तवः	४४
श्री लक्ष्मी सूक्त	४५

Download Book ~ https://www.hindibook.in

प्राक्कथन . . .

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी अपने-आप में सर्वाधिक तेजस्वी, जाज्वल्यमान और जीवन की सम्पूर्णता को देने में समर्थ महाविद्या है। यह अपने-आप में एक ऐसी साधना है, जो विरले लोगों को ही प्राप्त होती है। इस साधना के माध्यम से जीवन के चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति तो होती ही है, साथ ही साथ इस साधना के माध्यम से आध्यात्मिक जीवन में भी सम्पूर्णता प्राप्त होती है, किसी भी प्रकार से किसी भी साधना में न्यूनता रह ही नहीं सकती, क्योंकि यह साधना अन्य साधनाओं की भी पूर्णता देने में समर्थ महाविद्या है। कोई भी साधना हो, वह चाहे अप्सरा साधना हो, दैवी साधना हो, शैव साधना हो, वैष्णव साधना हो या किसी भी प्रकार की साधना हो, यदि उसमें सफलता नहीं मिल रही हो, तो उसको भी पूर्णता के साथ सिद्ध कराने में यह महाविद्या समर्थ है– यदि इस साधना को पहले सम्पन्न कर लिया जाय। इसलिए जीवन में सब कुछ प्राप्त कर लेने के लिए यह महाविद्या पूर्ण सहायक साधना है।

इसके साथ ही साथ इसकी एक विशेषता यह भी है, कि यह भौतिक सुखों को भी पूर्णता के साथ देने में सर्व समर्थ महाविद्या है। हमारे जीवन में चाहे किसी भी प्रकार का अभाव हो, कष्ट हो, पीड़ा हो, बाधा हो, दुःख हो, दैन्य हो, न्यूनता हो, उन सबको एक ही झटके में समाप्त करने की अगर कोई महाविद्या है, तो वह 'षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना' है।

इस साधना की तीसरी विशेषता यह है, कि यह साधना कायाकल्प करने में समर्थ है। चाहे वह पुरुष हो या स्त्री हो। यदि स्त्री है और सौन्दर्य में किसी भी प्रकार की न्यूनता है या उसके जीवन में किसी भी प्रकार की कमी हो, तो इस साधना को सम्पन्न करने पर वह अपने-आप में पूर्ण सौन्दर्यमयी और सम्मोहक नारी बन जाती है। उसके चेहरे की झाइयां और उसके चेहरे की न्यूनताएं समाप्त हो जाती हैं। इसके साथ ही साथ यदि किसी पुरुष के शरीर में किसी प्रकार की न्यूनता या पौरुषत्व की कमी या हिम्मत, साहस, बल, ओज की कमी हो, तो उसको भी पूर्णता देने में यह साधना समर्थ है। इस साधना से साधक का चेहरा अपने-आप में तेजस्वी, अद्वितीय दमक से युक्त ललाट, सिंह के समान दर्पोन्नत वक्षस्थल बन जाता है।

इस साधना की चौथी विशेषता यह है, कि इस साधना के माध्यम से जीवन में निरन्तर धन प्राप्त होता ही रहता है और आय के सैकड़ों स्रोत खुल जाते हैं, चाहे वह व्यापार करता हो, चाहे वह नौकरी करता हो; इस प्रकार की सुविधाएं, इस प्रकार के रास्ते अपने-आप बन जाते हैं, जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते, कि ऐसे भी धन प्राप्ति हो सकती है! और इसी प्रकार से पूरे जीवन पर्यन्त कई रास्तों के माध्यम से, कई क्रियाओं

Download Book ~ https://www.hindibook.in

नहीं रह पाती। इसीलिए षोडशी त्रिपुर सुन्दरी दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ महाविद्या मानी गई है। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है, कि जो भी मनुष्य जाति में जन्म लेता है, उसे इस साधना को सम्पन्न करना ही चाहिए, आवश्यकता है योग्य गुरु की; आवश्यकता है, प्रामाणिक विधान की और आवश्यकता है, पूर्ण रूप से श्रद्धा और विश्वास की।

पूज्य गुरुदेव ने बहुत ही गोपनीय साधना विधि को पहली बार इस पुस्तक के माध्यम से स्पष्ट करने की आज्ञा दी है, जो साधकों के लिए वरदान तुल्य है, कल्पवृक्ष के समान है, जिसको सम्पन्न करने पर समस्त प्रकार के भौतिक, दैविक, दैहिक और आध्यात्मिक फलों की प्राप्ति होती है।

इस साधना को सम्पन्न करने पर मैंने वृद्धों को अपने-आप में तारुण्यमय होते देखा है, वृद्धाओं को अपने-आप में यौवनमय होते देखा है। मजदूरों को धनयुक्त होते देखा है, साधनाहीन लोगों को साधना सम्पन्न होते देखा है, दुःखी, पीड़ित, अपाहिज, बीमार, असहाय लोगों को पूर्ण स्वस्थ और तरोताजा होते देखा है। इसलिए यह साधना अपने-आप में छोटी-सी साधना नहीं है, अपने-आप में सम्पूर्णता समेटे हुए महाविद्या है– और हमने इस गोपनीय विद्या को इन थोड़े से पन्नों में उतार करके, साधकों के लिए एक जीवन-आधार दे दिया है, जिसके माध्यम से वे पूर्णता तक पहुंच सकें, सौभाग्यशाली बनें, यौवनवान बनें, तेजस्वी बनें और प्रत्येक दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ बनें।

और इसी सर्वश्रेष्ठता को इस पुस्तक में समेट कर पूज्यपाद गुरुदेव ने जो कुछ हमें ज्ञान दिया है, जो कुछ हमें अनुभव कराया है और मैंने स्वयं इस साधना को सम्पन्न कर जो कुछ अनुभव किया है– वह अपने-आप में अतुलनीय है, क्योंकि इससे उच्चकोटि की अन्य कोई साधना नहीं है।

मुझे विश्वास है, कि प्रत्येक पाठक और साधक इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करेंगे और तब तक करते रहेंगे, जब तक उन्हें पूरी सफलता नहीं मिल जाय। गुरुदेव का हम पर आशीर्वाद है, यदि कोई साधक पूर्ण लगन, विश्वास और धैर्य के सथ इस साधना को सम्पन्न करता है, तो वह इस साधना को तो सिद्ध करता ही है, साथ ही सिद्धाश्रम के द्वार भी उसके लिए खुल जाते हैं, जिससे कि वह सिद्धाश्रम में प्रवेश कर उस समुच्च स्थिति को प्राप्त कर सके जो योगियों के लिए भी अलभ्य है।

"पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते". . . उपनिषद की यह उक्ति, यह स्थिति इस साधना के माध्यम से ही सम्भव है, इसीलिए यह साधना जीवन की जाज्वल्यमान, तेजस्वी, अद्वितीय और श्रेष्ट तथा परमोपयोगी साधना है।

मुझे विश्वास है, कि सभी पाठक और साधक, योगी, यति, गृहस्थ इसको सम्पन्न कर पूर्णता प्राप्त कर सकेंगे।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

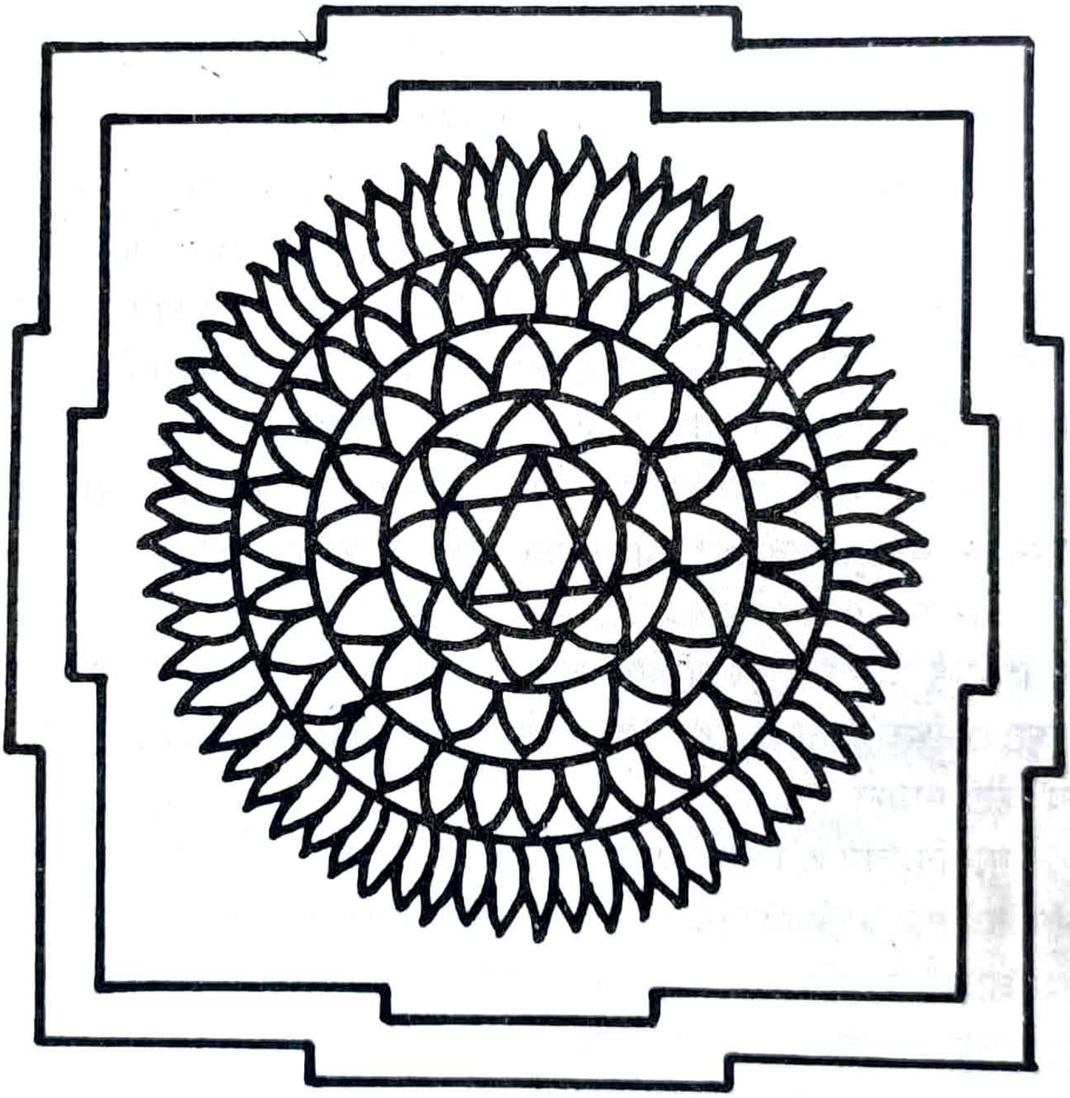

षोडशी यंत्र

Download Book ~ https://www.hindibook.in

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त वीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया,
सम्मोहितं देवि! समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतोः।
विद्याः समस्तास्तव देवि! भेदाः स्त्रिया समस्ता सकला जगत्सु;
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत् का ते स्तुति स्तव्यपरा परोक्तिः।।

अर्थात् "हे भगवति! आप अनन्त शक्तिमयी हैं, समस्त विश्व की निर्मात्री तथा परम शक्ति स्वरूपा हैं। हे देवि! समस्त जगत आपकी माया के वशीभूत है तथा आप प्रसन्न होने पर जीवों को मुक्ति प्रदान करती हैं। संसार की सभी विद्याएं आप से सुशोभित हैं, सभी नारियों में आपकी शक्ति है। आप ही सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हैं, इससे अधिक आपकी और क्या स्तुति हो सकती है।"

पूर्वकाल से लेकर वर्तमान काल तक प्रत्येक भारतीय के जीवन में माता-पिता, गुरु और ईश्वर का प्रमुख स्थान रहा है और किसी न किसी रूप में उसने परब्रह्म की उपासना की है। शास्त्रों में वर्णन आता है, कि समस्त ब्रह्माण्ड एवं ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र; मरुद्‌गण, गन्धर्व, अप्सराएं और किन्नर; समस्त भौतिक पदार्थ, अण्डज, स्वेदज, उद्‌भिज और जरायुज; स्वाथर, जंगम, पशु, पक्षी, मनुष्य आदि समस्त प्राणी पराम्बा शक्ति से ही उत्पन्न हुए हैं। इसी पराम्बा शक्ति को विभिन्न नामों

Download Book ~ https://www.hindibook.in

से सम्बोधित किया जाता है, यथा– 'जगदम्बिका', 'अम्बिका', 'षोडशी त्रिपुर सुन्दरी', 'शिवा' (अक्षोम्य रुद्र की शक्ति) 'ललिता', 'राजराजेश्वरी', 'वैष्णवी', 'बाला' तथा 'पञ्चदशी'।

विभिन्न नामों से सम्बोधित होने वाली वैष्णवी ही दसों महाविद्याओं में 'षोडशी' के नाम से विख्यात हैं, इसी को 'ब्रह्मविद्या', 'ब्रह्ममयी' तथा 'श्रीविद्या' भी कहते हैं।

'श्री' शब्द का अर्थ सामान्यतः 'लक्ष्मी' बताया जाता है, जबकि "ब्रह्माण्डपुराणोत्तरखण्ड" में वर्णित आख्यान के अनुसार 'श्री' शब्द का मुख्यार्थ 'त्रिपुर सुन्दरी' ही है। महालक्ष्मी ने त्रिपुर सुन्दरी की चिर काल तक आराधना करके बहुविध वरदान प्राप्त किये, जिनमें महालक्ष्मी को 'श्री' शब्द से प्रसिद्ध होने का भी वरदान प्राप्त हुआ।

श्री शब्द सर्वोपरि श्रेष्ठता एवं पूज्य भाव का द्योतक है– और सर्वोपरि श्रेष्ठ तो केवल मात्र परब्रह्म हैं, अतः जिनमें ब्रह्मकला प्रकट होती है, उनके लिए ही 'श्री' शब्द व्यवहृत होता है। सर्वकारणभूता आत्मशक्ति वैष्णवी साक्षात् ब्रह्मरूपा होने के कारण ही 'श्री' शब्द से व्यवहृत होती हैं।

धर्म की रक्षा एवं लोकोपकार के लिए जिस प्रकार परब्रह्म परमात्मा अनेक रूपों में अवतरित होते हैं, उसी प्रकार पृथ्वी पर धर्म तथा धर्मपरायण व्यक्तियों की रक्षा के लिए ब्रह्मरूपा शक्ति भी अवतरित होती हैं। शक्ति के अवतारों में प्रमुख हैं – ज्वालामुखी, ब्रजेश्वरी, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, कामाख्या आदि।

श्री विद्या के त्रिविध रूप

सर्वकारणभूता 'श्री' तीन रूपों में अपने साधकों को वरदायक सिद्ध होती हैं–

स्थूल रूप

देवी के स्थूल स्वरूप की आराधना करने वाले साधक मंत्र-जप कर सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं, तो वे अपने नेत्रों के द्वारा उस दिव्य लोकोत्तर आह्लादकारक तेजपुञ्ज का दर्शन प्राप्त कर लेते हैं और अपने हाथों से उनके चरणों का स्पर्श कर अपने आप को कृतकृत्य कर लेते हैं।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

सूक्ष्म रूप

देवी के सूक्ष्म रूप के आराधक 'मंत्रमयी देवता' के सिद्धान्त के अनुसार मंत्रवर्णों में देवता शरीरावयवों की उपस्थिति को पहचान लेते हैं तथा मंत्र उच्चारण एवं मंत्र ध्वनि श्रवणों के द्वारा भगवती के सूक्ष्म रूप से साक्षात् कर लेते हैं।

पर रूप

महापुण्यवान साधक ही देवी के 'पर रूप' को अपने मन-इन्द्रिय द्वारा गृहीत कर पाते हैं। देवी का यह स्वरूप आत्मशक्ति जगदम्बा का पूर्ण चैतन्य रूप होता है। साधक इस स्वरूप से एकाकार तभी हो सकता है, जब गुरु की कृपा प्राप्त होती है। आत्मशक्ति की चैतन्यता प्राप्त करना मानव मात्र के लिए प्रत्यक्षतः केवल गुरु के द्वारा ही सम्भव हो पाता है, क्योंकि केवल मात्र गुरु ही अपनी आत्मशक्ति को चैतन्य किये हुए प्रत्यक्ष देव के रूप में साधक को सहज सुलभ होते हैं। यदि गुरु के साथ शिष्य अपनी आत्मशक्ति को अभेद भाव से जोड़ लेता है, तो उस शिष्य का वैष्णवी के 'पर रूप' से सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, अतः पराशक्ति से पूर्ण अभेद रूप से एकीकृत होने के लिए गुरु-कृपा से बढ़कर अन्य कोई सुगम उपाय उपलब्ध नहीं है।

षोडशी स्वरूप की प्रतीकात्मकता

बालार्क मण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशांकुश शरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे।।

(शाक्तप्रमोद)

अर्थात् "उदित होते हुए सूर्य मण्डल की शोभा को धारण करने वाली चार भुजाओं तथा तीन नेत्रों से युक्त, पाश, अंकुश एवं धनुष-बाण धारण किये हुए भगवती का मैं ध्यान करता हूं।"

भगवती के उपरोक्त स्वरूप वर्णन में प्रतीकों का उदाहरण यों ही नहीं दिया गया है, अपितु ये सभी विशिष्ट अर्थों को अपने में समेटे हुए हैं–

प्रकाश, ताप (अग्नि) और आहुतसोम (चन्द्रमा) अपने इन तीन रूपों में सूर्य पूरे विश्व को प्रकाशित कर रहा है, (सूर्य में षोडश कला पुरुष का पूर्ण विकास है, अतः इसकी शक्ति को 'षोडशी' कहते हैं) इन तीन ज्योतियों के प्रतीक को धारण करने के कारण ही षोडशी को 'त्रिलोचना' कहा गया है।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

सूर्यस्थ अग्नि सोमाहुति से शान्त होती है, जिसकी प्रतिकृति प्रातः बेला में उदित होते बाल सूर्य में भासित होती है, देवी के शरीर की आभा इस बाल सूर्य मण्डल की आभा के अनुरूप है। सौरमण्डल में सूर्य, पृथ्वी एवं समस्त ग्रह परस्पर सौर-आकर्षण सूत्र से बद्ध हैं, जिसके कारण वे अपनी परिधि में तथा अपने केन्द्र पर ही बद्ध होते हैं। अस्तु, सूर्य ने पृथ्वी को आकर्षण रूपी पाश से बद्ध कर रखा है, जो देवी के हाथ में 'पाश' के प्रतीक के रूप में शोभायमान है।

आद्याशक्ति पूरी प्रकृति को अपने नियंत्रण में रखती हैं, उन्हीं की इच्छा से अग्नि व सूर्य तप्त हैं तथा इन्द्र, वरुण, यम आदि समस्त देव अपने-अपने कार्यों में संलग्न हैं। इस नियन्त्रण शक्ति के प्रतीक रूप में ही शिवा के हाथ में 'अंकुश' शोभित है।

अपने द्वारा निर्धारित नियमों का उल्लंघन करते हुए भगवती जिन्हें पाती हैं, वे उनका अन्न, वायु और वर्षा रूपी तीन शरों (बाणों) से नाश कर देती हैं। ये शर ही देवी के तरकश में अवस्थित हैं।

भगवती को चार भुजाओं वाली बताया गया है, उनकी ये चार भुजाएं प्रतीक हैं, कि उन्होंने सृष्टिकर्ता 'ब्रह्मा', सृष्टि के पालनकर्ता 'विष्णु', सृष्टि के संहारकर्ता 'रुद्र' तथा खण्ड प्रलय के नियंत्रक 'यम' पर पूर्ण नियन्त्रण कर रखा है। अस्तु, ये चारों देवी की इच्छा के अधीन हैं।

षोडशी की उत्पत्ति

देवी की उत्पत्ति से सम्बन्धित अनेक कथाएं प्राप्त होती हैं। ऋग्वेद में परब्रह्म का पितृ रूप 'प्रजापति' बताया गया है और मातृरूप 'अदिति' के नाम से वर्णित है। यह मातृशक्ति ही इस चराचर विश्व का अचल आधार है, यही मातृशक्ति स्रष्टा और सृष्टि दोनों ही है, अतः इसी से समस्त विश्व की उत्पत्ति होती है।

देवताओं की प्रार्थना पर देवी ने अपने स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा—''मैं परब्रह्म स्वरूप हूं, अजन्मा होते हुए भी परमार्थतः समय-समय पर विविध रूपों में जन्म लेती हूं।''

शक्ति सम्बन्धित विभिन्न आख्यानों में भी उपरोक्त तथ्य को स्वीकार किया गया है। पुराणों में धर्म का स्वरूप सबसे प्रधान है। प्रधान इसलिए है, कि पुराण साहित्य में परमात्मा, पराशक्ति, स्वर्ग-नर्क, धर्म-कर्म, वर्णाश्रम व्यवस्था इत्यादि विषय अत्यधिक सतर्कता से विवेचित हैं, किन्तु धर्म की विवेचना प्रमुख है। पुराणों के द्वारा

Download Book ~ https://www.hindibook.in

ही शिव, विष्णु, ब्रह्मा और शक्ति के विविध स्वरूपों तथा अवतारों का परिचय प्राप्त होता है। यही कारण है, कि प्राचीन काल से ही शैव, वैष्णव एवं शक्ति-पूजा भारत देश में प्रचलित रही है।

जहां कहीं भी शक्ति का वर्णन प्राप्त होता है, उन्हें शिव की पत्नी के रूप में ही दर्शाया गया है, किन्तु गृहलक्ष्मी का अवतरण विष्णु की शक्ति के रूप में हुआ है।

मार्कण्डेय पुराण में विष्णु की इस वैष्णवी शक्ति को 'सिंहवाहिनी' बताया गया है और उन्हें ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र एवं समस्त देवताओं से वन्दिता बताया गया है।

सृष्टि के द्वितीय कल्प में जब समस्त देवता तथा धर्मपरायण व्यक्ति असुरों से त्रस्त हो गये, तो उन्होंने महामाया की आराधना कर असुरों के त्रास से मुक्त करने की प्रार्थना की। देवताओं की प्रार्थना पर देवी ने उन्हें अभय प्रदान करते हुए कहा —"जब भी तुम मेरा स्मरण करोगे, मैं अवश्य ही तुम लोगों की रक्षा के लिए उपस्थित होऊंगी।"

समय-समय पर भगवती ने अपने मूल स्वरूप से अनेक रूपों में अवतरित होकर देवताओं को सुरक्षा प्रदान की है—

मधुकैटभ वध

प्रलयकाल में योगनिद्रा का आश्रय ले शेषनाग की शय्या पर भगवान विष्णु सो रहे थे। निद्रालीन विष्णु के कानों से महामाया ने मैल निकाली। उस मैल से 'मधु' और 'कैटभ' दो असुर उत्पन्न हुए, जिन्होंने महामाया की घोर तपस्या कर, इच्छा-मृत्यु का वर प्राप्त कर लिया और निर्भय होकर सर्वत्र विचरण करने लगे। उन दोनों असुरों ने ब्रह्मा को युद्ध के लिए ललकारा। स्वयं को असमर्थ पा ब्रह्मा जी विष्णु की शरण में गये और निद्रालीन विष्णु को जगाने के लिए योगनिद्रा का स्तवन किया — "हे देवी! तुम अपने उदार प्रभावों से प्रशंसित हो, अतः इन दोनों दुर्धर्ष असुरों को मोहित कर दो और भगवान विष्णु को इनका वध करने हेतु निद्रा से जगा दो।"

तदुपरान्त निद्रा का त्याग कर विष्णु ने ब्रह्मा की प्रार्थना पर उन दोनों असुरों से युद्ध करने का निर्णय लिया। इच्छा-मृत्यु वर के कारण विष्णु ने उन दैत्यों से विश्राम का अवसर चाहा और बारी-बारी से युद्ध करने की इच्छा व्यक्त की; मदमत्त असुरों ने सोचा, कि विष्णु पराजित हो ही जायेंगे, अतः उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर कुछ समय के लिए युद्ध स्थगित कर दिया। अवसर प्राप्त होने पर विष्णु ध्यानस्थ होकर

Download Book ~ https://www.hindibook.in

उनके वध का उपाय ढूंढने लगे, तभी ब्रह्मा की प्रार्थना पर महामाया ने विश्वास दिलाया कि मेरी माया से मोहित होकर दोनों असुर शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जायेंगे।

निर्धारित समय पर पुनः युद्ध आरम्भ हुआ। कुछ समयोपरान्त विष्णु ने दैत्यों से वर मांगने को कहा।

मोहित असुरों ने कहा – "हे विष्णु! अब तुम परास्त होने वाले हो, अतः तुम्हारी वर देने की क्षमता भी समाप्तप्राय है। अब तुम अपनी जान बचाने की चिन्ता करो। हां, तुम कहो तो हम तुम्हें अवश्य वर प्रदान करेंगे।"

महामाया की माया के कारण वे असुर समझ नहीं सके, कि उन्होंने क्या कह दिया है।

असुरों की बात सुनकर विष्णु ने कहा–"तुम दोनों मेरे हाथ से मारे जाओ, यही वर चाहिए।"

वचन से विमुख न होने के कारण मधु ने कहा – "ठीक है, तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी, किन्तु तुम को हम दोनों का वध उस स्थान पर करना होगा, जो जल रहित हो तथा पूर्व में वहां किसी की मृत्यु न हुई हो।

"तथास्तु" कहकर भगवान ने दोनों का वध अपनी जंघा पर किया। इस प्रकार देवी की कृपा से मधु-कैटभ का नाश हुआ।

महिषासुर का वध

देवासुर संग्राम में "महिषासुर" देवताओं को तथा इन्द्र को परास्त कर स्वयं इन्द्रपद पर आसीन हो गया। महिषासुर से भयभीत देवता ब्रह्मा के साथ विष्णु और शिव के पास गये और कहा – "दुरात्मा महिष ने समस्त देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया है और स्वयं अधिष्ठाता बन बैठा है। उससे पीड़ित हम सभी देव आपकी शरण में आये हैं, आप कृपा कर उसके वध का उपाय करें।"

देवताओं की प्रार्थना पर विष्णु ने महिषासुर के वध का हेतु ध्यान क्रिया द्वारा जाना और देवताओं को बताया– "समस्त देवताओं की सम्मिलित शक्ति से प्रकट हुई देवी के द्वारा ही महिषासुर का संहार होना नियति ने निर्धारित किया है; अतः तुम सभी अपनी शक्ति को एक जगह एकत्र करो, जिससे महाशक्तिशालिनी देवी प्रकट हो सकें।"

चक्रपाणि विष्णु के मुख से एक तेज प्रकट हुआ, इसी प्रकार ब्रह्मा,

Download Book ~ https://www.hindibook.in

रुद्र, वरुण, इन्द्र, यम समस्त देवताओं के शरीर से तेज प्रकट हुआ, जो महान तेजपुञ्ज के रूप में जाज्वल्यमान पर्वत के समान भासित होने लगा। यह तेजपुञ्ज एक नारी रूप में परिणित हो गया, जिसकी तेजस्विता सम्पूर्ण दिशाओं को आलोकित कर रही थी।

तदनन्तर उस देवी का दर्शन कर समस्त देव अत्यधिक प्रसन्न हुए और उन्हें अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये। देवताओं ने देवी का स्तवन किया। देवी ने प्रसन्न होकर देवताओं को अभय का वरदान दिया और लीला करने के उद्देश्य से 'शतश्रृंग पर्वत' पर आईं।

नारद ने महिष के मन में, षोडषी के रूप का वर्णन कर, उससे विवाह करने की भावना जाग्रत की। इस भावना से प्रेरित हो महिष ने अपने दूत को विवाह का प्रस्ताव लेकर देवी के पास भेजा। उस समय वे जम्मू से उत्तर दिशा में स्थित शतश्रृंग पर्वत पर 'अर्द्धकुमारी' नामक स्थान पर विराजमान थीं। देवी ने महिष के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

प्रस्ताव के अस्वीकृत होने के कारण वह क्रोधित हो युद्ध के लिए प्रेरित हुआ। देवी ने इस युद्ध में दैत्यों की विशाल सेना को समाप्त कर दिया। सेना का संहार होता देख महिषासुर ने भैंसे का रूप धारण कर देवी पर प्रहार किया। क्रोधोन्मत्त असुर को अपनी ओर आता देख भगवती ने पाश फेंककर उसे बांध लिया।

भैंसे का रूप त्याग कर महिष ने तुरन्त सिंह का रूप धारण कर लिया। ज्यों ही जगदम्बा उसका मस्तक काटने के लिए उद्यत हुई, उसने खड्ग धारी असुर का रूप धारण कर लिया, जिसे देवी ने अपने बाणों से बींध डाला, किन्तु असुर ने तुरन्त हाथी का रूप धारण कर लिया और देवी के सिंह को अपनी सूंड में लपेट कर खींचने लगा, तब वैष्णवी ने उसकी सूंड़ काट दी।

तदुपरान्त महिष ने पुनः भैंसे का रूप धारण कर लिया, यह देख देवी ने उस महाअसुर को अपने पैर से दबाकर त्रिशूल से उसके कण्ठ पर प्रहार किया। प्रहार होते ही महिषासुर भैंसे के मुख से मानव रूप में बाहर आने लगा। आधा शरीर बाहर निकला था, तभी देवी ने उसका मस्तक काट गिराया। इस प्रकार महिषासुर के वध से समस्त देवगण प्रसन्न होकर देवी की स्तुति करने लगे।

कालान्तर में षोडषी ने अपने महाकाली, महालक्ष्मी व महासरस्वती स्वरूप में शुंभ, निशुंभ, धूम्रलोचन, रक्तबीज, चण्ड-मुण्ड अनेक महाअसुरों का वध कर इस पृथ्वी पर धर्म की स्थापना की।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

Download Book ~ https://www.hindibook.in

महालक्ष्मी

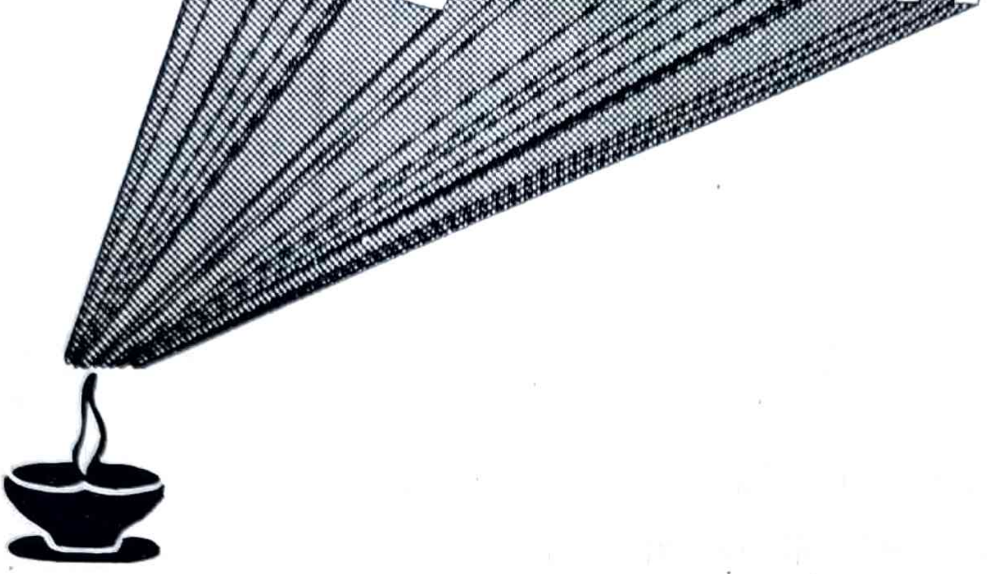

वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां,
तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीं।
बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधाना-;
माद्यांशक्तिं सकलजननीं विष्णुवामांकसंस्थाम्।।

अर्थात् "परम कल्याणमयी, शुद्ध स्वर्ण आभा वाली, तेजयुक्त, स्वर्ण रेखा खचित वस्त्र धारण की हुई, अनेक आभूषणों से सुशोभित अंगों वाली, स्वर्ण कलश, बीजापूर एवं स्वर्ण कमल धारण करने वाली आद्याशक्ति, समस्त लोकों की जननी, भगवान विष्णु के वामपार्श्व में सदा सुशोभित भगवती महालक्ष्मी के श्री चरणों में मैं पुनः-पुनः वन्दन करता हूं।"

महालक्ष्मी ही जगत जननी हैं, ब्रह्मा, विष्णु आदि सभी देवता इन्हीं से प्रकट होते हैं। देवी की जितनी भी शक्तियां मानी गई हैं, उन सबका मूल महालक्ष्मी ही हैं, सारा जगत प्रपंच इनसे ही प्रकट हुआ है, स्थूल-सूक्ष्म, दृश्य-अदृश्य अथवा व्यक्त-अव्यक्त सभी इन्हीं के स्वरूप हैं। यद्यपि अव्यक्त रूप से ये सर्वत्र व्याप्त हैं, परन्तु अपने साधकों पर अनुग्रह करने के लिए ये अपने परम दिव्य चिन्मय सगुण रूप से भी सदैव उपस्थित होती हैं।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

की स्तुति की। प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने अपने मंगलमय स्वरूप में उन्हें दर्शन प्रदान किया और देवताओं को उनकी समस्या का समाधान सुझाते हुए कहा— "तुम यदि क्षीरसागर का मंथन करो, तो अमृत उत्पन्न होगा, जिसका पान करके तुम अजर-अमर हो जाओगे, किन्तु समुद्र मंथन का कार्य अत्यधिक दुष्कर होने के कारण तुम्हें दैत्यों का सहारा लेना पड़ेगा।

भगवान विष्णु की आज्ञा से देवताओं ने दैत्यों से सन्धि की और समुद्र मंथन हेतु मंदराचल पर्वत को मथानी तथा वासुकी को रस्सी के रूप में उपयोग किया। भगवान ने दैत्यों को वासुकी के मुख की ओर तथा देवताओं को पूंछ की ओर लगाया; स्वयं भक्तवत्सल भगवान कछुए का रूप धारण कर क्षीरसागर में मंदराचल का आधार बने हुए थे।

दैत्यों और दानवों के द्वारा संयुक्त रूप से मंथन करने पर चौदह रत्न प्रकट हुए, इन चौदह रत्नों में अमृत का कलश हाथ में लिए धन्वन्तरी प्रकट हुए तथा चौदहवें रत्न के रूप में भगवती महालक्ष्मी प्रकट हुईं, जो खिले हुए कमल पर विराजमान थीं, उनके श्री अंगों की कान्ति से समस्त दिशाएं प्रकाशित हो उठीं। ऐसी त्रैलोक्य सुन्दरी को प्राप्त कर समस्त देवता व ऋषिगण हर्षित हो उठे। सभी देवताओं ने वैदिक श्री सूक्त के द्वारा लक्ष्मी की स्तुति की। तत्पश्चात् वे भगवान विष्णु के वक्षस्थल में प्रवेश कर गईं। परम सुन्दरी लक्ष्मी को इस प्रकार लोप होते देख दैत्य अत्यधिक निराश हुए और धन्वन्तरी के हाथ से अमृत कलश छीन लिया; किन्तु भगवान विष्णु ने दैत्यों को अपनी योगमाया द्वारा मोहित कर सारा अमृत देवताओं को पिला दिया। तत्पश्चात् इन्द्र ने अत्यन्त श्रद्धा एवं भक्ति-भाव से भगवती लक्ष्मी की स्तुति की, जिससे प्रसन्न होकर उन्होंने इन्द्र तथा अन्य देवताओं को उनकी इच्छानुसार वर प्रदान किया।

भगवान विष्णु की ये अनन्य प्रिया हैं तथा श्री हरि के प्रत्येक अवतार में उनके साथ ही ये भी अवतरित होती हैं, जिसके फलस्वरूप ये श्री राम के साथ सीता तथा श्री कृष्ण के साथ रुक्मिणी के रूप में अवतीर्ण हुईं। भगवान विष्णु के साथ लक्ष्मी की आराधना करने पर समस्त आध्यात्मिक एवं भौतिक अभ्युदय तथा निःश्रेयस की सिद्धि होती है। महालक्ष्मी साधुता एवं सतीत्व की प्रतिमूर्ति हैं, अतः पवित्र स्त्रियों को लक्ष्मी कह कर सम्मानित किया जाता है। जो व्यक्ति मृदुभाषी, कार्यकुशल, क्रोधहीन तथा जितेन्द्रीय होते हैं, उनके घर वे अवश्य निवास करती हैं। जहां लक्ष्मी की साधना होती है, वहां सदैव धर्म, सम्पत्ति एवं सुयश की वृद्धि होती ही है।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

ये नित्य सनातन होती हुई भी लीला के लिए अनेक रूपों में प्रकट होती हैं। ये अपने एक स्वरूप से ब्रह्मा, विष्णु आदि देवों की सेवा करती हैं तथा दूसरे रूप में भक्तों का कल्याण करती हैं। लक्ष्मी की उपस्थिति प्रायः दो प्रमुख रूपों में मानी जाती है– 'श्री' एवं 'लक्ष्मी'। अपने दोनों रूपों से ये भगवान विष्णु की ही पत्नी हैं। इस प्रकार लक्ष्मी के दो स्वरूप हमारे सामने स्पष्ट होते हैं–

पहला, लक्ष्मी स्वरूप जो सदैव श्री नारायण के वक्षस्थल में वास करती हैं और कभी उनसे अलग नहीं होतीं।

दूसरा, प्राकृतिक सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी का रूप है। यह प्राकृतिक सम्पत्ति जड़ है, किन्तु इसे भी 'श्री' कहा जाता है। इस जड़ सम्पत्ति पर विभिन्न कालानुसार विभिन्न व्यक्तियों का आधिपत्य होता है, इस प्रकार ये किसी एक की होकर नहीं रहतीं। अपने इसी स्वरूप के कारण लक्ष्मी को सर्वभोग्या, चंचला, बहुगामिनी आदि भी कहा जाता है।

लक्ष्मी को कमल अत्यधिक प्रिय है और ये कमलवन में निवास करती हैं, कमल ही इनका आसन है और अपने हाथ में भी ये कमल धारण किये हुए हैं। अलग-अलग स्थानों पर ये अलग-अलग नामों से जानी जाती हैं। स्वर्ग में 'स्वर्गलक्ष्मी', गृहस्थों के घर में 'गृहलक्ष्मी', युद्ध में विजेताओं के पास 'विजयलक्ष्मी', राजाओं के पास 'राज्यलक्ष्मी' तथा वणिक जनों के पास 'वाणिज्य लक्ष्मी' के रूप में निवास करती हैं।

लक्ष्मी की उत्पत्ति

इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा जाता है, कि ये महर्षि भृगु की पुत्री के रूप में उत्पन्न हुई थीं, जिसके कारण इन्हें 'भार्गवी' नाम से सम्बोधित किया गया। दैत्य-देव संग्राम के समय हुए समुद्र मंथन के द्वारा ये क्षीरसागर से उत्पन्न हुईं, अतः इन्हें 'क्षीरोद्तनया' के नाम से भी विभूषित किया गया। ये पद्मिनी विद्या की अधिष्ठात्री देवी हैं। दस महाविद्याओं में दसवीं महाविद्या 'कमला' इनका ही स्वरूप है। जब-जब भगवान विष्णु लोक कल्याण हेतु धरा पर अवतरित होते हैं, लक्ष्मी भी उनके साथ अवतीर्ण होकर उनकी प्रत्येक लीला में सहयोग प्रदान करती हैं।

महर्षि भृगु की पत्नी ख्याती ने एक भुवन मोहिनी कन्या को जन्म दिया। समस्त शुभ लक्षणों से युक्त होने के कारण भृगु दम्पत्ति ने उसका नाम 'लक्ष्मी' रखा। धीरे-धीरे किशोरावस्था आने पर वे भगवान नारायण के गुण से प्रभावित होकर उनके

Download Book ~ https://www.hindibook.in

प्रति अनुरक्त हो गईं और विष्णु को पति रूप में प्राप्त करने की इच्छा से समुद्र तट पर जाकर घोर तपस्या करने लगीं। कठोर तपस्या करते हुए एक हजार वर्ष व्यतीत हो गए। देवराज इन्द्र के मन में उनकी परीक्षा लेने की भावना जाग्रत हुई, अतः वे विष्णु रूप धारण कर लक्ष्मी के पास आये और वर मांगने को कहा। तपस्विनी लक्ष्मी इन्द्र के इस भाव को समझ गईं और वरदान देने से पूर्व विश्वरूप में दर्शन देने की प्रार्थना की। विश्वरूप प्रकट करने में इन्द्र असमर्थ थे, अतः वे लज्जित होकर क्षमा-याचना करते हुए लौट गए।

लक्ष्मी की तपस्या की ख्याति भगवान विष्णु ने सुनी और वे उन्हें दर्शन देने आये तथा लक्ष्मी से वर मांगने को कहा। लक्ष्मी ने उनसे भी कहा— "यदि आप साक्षात् नारायण हैं, तो अपने विश्वरूप में मुझे दर्शन प्रदान कर कृतार्थ करें।"

देवी की इस बात को सुन कर भगवान विष्णु ने अपने विश्वरूप का दर्शन उन्हें दिया तथा अपने इच्छित वर को मांगने को कहा। भगवान विष्णु की बात सुन कर लक्ष्मी ने उन्हें अपने पति रूप में प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की।

पुराणों में लक्ष्मी के प्राकट्य से सम्बन्धित एक अन्य कथा भी मिलती है— महर्षि दुर्वासा जो भगवान शंकर के अंशभूत स्वरूप हैं, पृथ्वी तल पर विचरण करते हुए एक उपवन में जा पहुंचे, जहां 'विद्याधरी' नाम की एक सुन्दरी अपने हाथ में पारिजात पुष्पों की माला लिए खड़ी थी। उन पुष्पों की सुगन्ध से पूरा वातावरण सुगन्धित हो रहा था। विद्याधरी ने वह माला दुर्वासा ऋषि को प्रदान कर दी, जिसे अपने मस्तक पर धारण कर वे भ्रमण करने लगे। कुछ आगे जाने पर देवराज अपने ऐरावत हाथी पर सवार आते दिखाई दिए। ऋषि ने वह माला ऐरावत के मस्तक पर डाल दी। माला की तीव्र सुगन्ध को सहन न कर सकने के कारण ऐरावत ने सूंढ़ से माला उतार कर जमीन पर डाल दी। यह देख दुर्वासा ऋषि ने क्रोधोन्मत्त हो इन्द्र को श्राप दे दिया— "जिस माला को तूने प्रणाम तक नहीं किया, वह मात्र पुष्प माला नहीं थी, अपितु लक्ष्मी का धाम थी; ऐसी दिव्य माला का अनादर करने के कारण तेरे अधिकार में स्थित समस्त लोकों से लक्ष्मी अदृश्य हो जायेगी।"

ऋषि के श्राप को सुनकर देवराज इन्द्र ऐरावत से उतर कर उनके चरणों में गिर गये, किन्तु दुर्वासा इन्द्र को फटकार कर चले गए। उसी क्षण तीनों लोकों की लक्ष्मी नष्ट हो गई और देवताओं को श्रीहीन जानकर दैत्यों ने उन पर चढ़ाई कर दी। उत्साह हीन देवतागण दैत्यों से हार गए और ब्रह्मा की शरण में गए। समस्त देवताओं के साथ ब्रह्मा क्षीरसागर के उत्तर तट की ओर गए और भगवान विष्णु

Download Book ~ https://www.hindibook.in

महालक्ष्मी पूजन

रात्रि-साधना से पूर्व स्नान आदि से शुद्ध होकर पूजा कक्ष में आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठ जाना चाहिए। अपने सामने चौकी पर वस्त्र बिछाकर, भगवती महालक्ष्मी का चित्र व यन्त्र स्थापित कर लें, धूप तथा दीपक प्रज्चलित करें, पूजन की अन्य सामग्री यथास्थान रख लें।

पवित्रीकरण :

बायें हाथ में जल लेकर दायें हाथ से अपने ऊपर जल छिड़कें तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

आचमन :

दायें हाथ में जल लेकर तीन बार पान करें तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ मूलम् आत्मतत्त्वाय नमः।
ॐ मूलम् विद्यातत्त्वाय नमः।
ॐ मूलम् शिवतत्त्वाय नमः।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

संकल्प :

दाहिने हाथ में जल लेकर उसमें अक्षत, पुष्प मिला लें—

ॐ स्वस्तिः अद्य अमुकमासे, अमुक पक्षे, पुण्य तिथौ, अमुक गोत्रः, अमुक शर्माहं मम इह जन्मनि सकल पापोपक्षय पूर्वकं दीर्घायु विपुल धन प्राप्त्यर्थे सदभीष्ट सिद्ध्यर्थे च गणपति पूजनं, गुरु पूजनं, कलश स्थापन पूर्वकं श्री महालक्ष्मी देवता पूजनं वयं सम्पत्स्यामहे।

जल भूमि पर छोड़ दें।

गणपति पूजन :

दोनों हाथ जोड़कर गणपति का आवाहन करें—

ॐ गणानान्त्वा गणपति हवामहे कविं कवीनामुपम श्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रृण्वन्निभिः सिद्धिसादनं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ, इह तिष्ट, आवाहयामि, स्थापयामि नमः।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि नमः।

हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि नमः।

मुखे आचमनीयं समर्पयामि नमः।

सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि नमः।

वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि नमः।

यज्ञोपवीतं समर्पयामि नमः।

गन्धं, अक्षतान् समर्पयामि नमः।

पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि नमः।

आचमनीयं जलं समर्पयामि नमः।

मुख शुद्ध्यर्थं पूगीफलं, एला लवंगादिकं समर्पयामि नमः।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

आसन शुद्धि :

दायें हाथ में जल लेकर आसन शुद्धि हेतु विनियोग करें—

ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसन शोधने विनियोगः।

जल भूमि पर छोड़ दें; फिर दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें—

**ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥**

स्वस्तिवाचन :

दोनों हाथ जोड़ें—

ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः। हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपति (गूं) हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति (गूं) हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति (गूं) हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।

स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनस्ताक्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।

ॐ अग्नि र्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता आदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पति र्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व (गूं) शान्तिः शान्तिरेव शान्ति सा मा शान्तिरेधि।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

चिन्त्य स्वरूपं, समस्त स्वरूपं गुरुम् आवाहयामि,
पाद्यं समर्पयामि नमः।

आसन :

पाद्यान्ते आस्तं, कमलासनं समर्पयामि नमः।
एतोस्मानं स कृते कल्याण त्वां गुरुपाद पूजनान्ते स चिन्त्यं एतोस्मानं स कृते कल्याण त्वां पाद्यं समर्पयामि,
आसनं समर्पयामि नमः।

अर्घ्य :

आसनान्ते अर्घ्यं समर्पयामि नमः।

स्नान :

अर्घ्यान्ते सर्वतीर्थेन जलेन पुनः आचमनीयं
स्नानं च समर्पयामि नमः।

वस्त्र :

वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि नमः।

चन्दन :

चन्दनं समर्पयामि नमः।

अक्षत :

अक्षतान् समर्पयामि नमः।

धूप :

सर्वसौगन्ध्यं समर्पयामि नमः।

दीप :

दीपं दर्शयामि नमः।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

नैवेद्य :

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष (गूं) इति नैवेद्यं निवेदयामि नमः। आचमनीयं जलं समर्पयामि नमः। मुख शुद्ध्यर्थ पूगीफलं एला लवंगादिकं समर्पयामि नमः।

प्रार्थना :

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।
अज्ञांनतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।
अनेन कृतेन यथा लब्धोपचारेण
पूजनेन श्री गुरुदेवः प्रीयन्ताम्।

एक आचमनी जल छोड़ दें।

कलश पूजन :

पहले वरुण देव का ध्यान करें—

नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय सुश्वेतहाराय सुमंगलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।
वरुणं ध्यायामि, आवाहयामि, पूजयामि नमः।

कलश को जल से भर कर अपने बायीं ओर रखें और उसमें वरुण का आवाहन करें—

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदाः नदाः।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशे तु समाश्रिताः।

इसके बाद गन्ध, अक्षत, पुष्प से कलश की पूजा करें, फिर कलश को अनामिका उंगली से स्पर्श करते हुए यह सन्दर्भ बोलें—

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो
वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदनमसि
वरुणस्य ऋत सदनमासीत्।

ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि, पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमः।

इसके बाद कलश के जल में गन्धाक्षत तथा पुष्प डाल कर समस्त तीर्थों का आवाहन करें—

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।
ब्रह्माण्डोदर तीर्थानि करैः पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव! तीर्थं देहि दिवाकर।।
पूर्वे ऋग्वेदाय नमः।
दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः।
पश्चिमे सामवेदाय नमः।
उत्तरे अथर्ववेदाय नमः।
कलश मध्ये अपाम्पतये वरुणाय नमः।

कलश प्रार्थना :

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयं।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।
त्वयि तिष्टन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।
सानिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।
प्रसन्नो भव! वरदो भव! अनया पूजया वरुणाद्यावाहिता देवता प्रीयन्तां न मम।

चौकी पर भगवती महालक्ष्मी का चित्र स्थापित कर लें, फिर पूजन आरम्भ करें–

ध्यान :

दोनों हाथ जोड़कर भगवती महालक्ष्मी का ध्यान करें–

अक्षस्रक परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिञ्च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवालप्रभां;
सेवे सैरिभ मर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजोद्भवाम्।।

रुद्राक्ष की माला, फरसा, गदा, बाण, वज्र, कमण्डल, दण्ड, शक्ति, तलवार, ढाल, शंख, घंटा, सुरापात्र, त्रिशूल, फांसी और सुदर्शन चक्र– इन आयुधों को धारण किये हुए, मूंगे के समान शरीर कान्ति वाली, सब देवताओं के तेज से युक्त भगवती लक्ष्मी का मैं ध्यान करता हूं।

आवाहन :

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजां।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह।।
ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सभूमि (गूं) सर्वतः स्पृत्त्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः आवाहयामि।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

आसन :

आसन देने के लिए पुष्प हाथ में ले लें–

तां म ऽ आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।

ॐ पुरुष एवेद (गूं) सर्वं यदभूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः आसनं समर्पयामि।

पाद्य :

भगवती को चरण धोने के लिए जल प्रदान करें–

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्री र्मादेवी जुषताम्।।

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य :

दूब, तिल, कुश, सरसों, पुष्प, अक्षत तथा चन्दन जल में मिलाकर भगवती को अर्पण करें–

ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वंग्व्यक्रामत् साशनानशनेऽअभि।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

ॐ अपा (गूं) रसमुद्वस्यस (गूं) सूर्ये सन्त समाहितम्।
आ (गूं) रसस्य यो रसःतं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम
गृहीतोऽसीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल स्नान :

यन्त्र को शुद्ध जल से स्नान करावें—

ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता
रौद्रा नभोरूपा पार्जन्याः।

श्री महालक्ष्म्यै नमः शुद्ध जल स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र :

महालक्ष्मी को वस्त्र अर्पित करें—

ॐ उपैति मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोस्मि सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।
तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्तस्मादजायत।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि नमः।

यज्ञोपवीत :

महालक्ष्मी को यज्ञोपवीत अर्पित करें—

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्टामलक्ष्मीं नाशयाम्यहं।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।
ॐ तस्मादश्वाऽजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि नमः।।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

चन्दन :

महालक्ष्मी के यन्त्र, चित्र पर चन्दन चढ़ावें—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाः अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः चन्दनं समर्पयामि।।

सौभाग्य सूत्र :

महालक्ष्मी को सौभाग्य सूत्र अर्पित करें—

ॐ सौभाग्य सूत्रं वरदे, सुवर्ण मणि संयुक्तम्।
कंठे बध्नामि देवेशि, सौभाग्यं देहि मे सदा।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः मंगल सूत्रं समर्पयामि नमः।

अक्षत :

महालक्ष्मी के यन्त्र, चित्र पर अक्षत चढ़ावें—

अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न विष्ट्या मतीयो जान्विन्द्रते हरी।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमाला :

चित्र पर पुष्पमाला चढ़ावें—

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।
ॐ तं पुरुषं व्यदधुः कतिधा विकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः पुष्पमालां समर्पयामि।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।

श्री महालक्ष्म्यै नमः, पयः स्नानं समर्पयामि।

दधि स्नान

दही से स्नान करायें

ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभिनो मुखाकरत् प्रण आयूंषि तारिषत्॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः, दधि स्नानं समर्पयामि।

घृत स्नान :

घृत से स्नान करायें

ॐ घृतं घृतपावानः
पिबतवसांवसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य
हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो
दिग्भ्यः स्वाहा।

श्री महालक्ष्म्यै नमः, घृत स्नानं समर्पयामि।

मधु स्नान

शहद से स्नान करायें

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो
मधुमत् पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु
नः पिता मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु
सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

श्री महालक्ष्म्यै नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

शर्करा स्नान :

शक्कर से स्नान करायें

Download Book ~ https://www.hindibook.in

सौभाग्य द्रव्य :

महालक्ष्मी के चित्र व यंत्र पर अबीर, गुलाल तथा हल्दी चढ़ावें—

अहिरिव भोगैः पर्येति बाहूं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।

हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमान् (गूं) संपरिपातु विश्वतः।

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादि समन्वितं।

नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वरि।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि।

धूप :

महालक्ष्मी के सम्मुख धूप प्रदर्शित करें—

ॐ कर्दमेन पूजा भूता मयि संभव कर्दम।

श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्म मालिनीम्।।

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः।

उरू तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः धूपम् आघ्रापयामि।

दीप :

दीप प्रदर्शित करें—

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।

नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।

ॐ चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः दीपं दर्शयामि नमः।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

नैवेद्य :

महालक्ष्मी को नैवेद्य हेतु मिष्ठान्न तथा फल चढ़ावें—

श्री महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीं ।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽ आवह ।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष (गूं) शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रांस्तथा लोकान् अकल्पयन् ।

श्री महालक्ष्म्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि, नाना ऋतुफलानि च समर्पयामि ।

आचमन :

निम्न मंत्र को बोल कर आचमनी से जल निर्माल्य पात्र में डालें—

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा ।
ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा ।
ॐ समानाय स्वाहा ।

ताम्बूल :

ताम्बूल (पान) चढ़ायें—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेम मालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातेवेदो म ऽ आवह ।।
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद हविः ।
श्री महालक्ष्म्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि ।

नीराजन :

नीराजन के लिए दीप दिखावें—

Download Book ~ https://www.hindibook.in

ॐ न तत्र सूर्यो भाति न तारकं नेमा विद्युतो कुतोऽयमग्निः
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।

जल आरती :

ॐ द्यौः शान्तिरन्तिरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्ति ब्रह्म शान्तिः सर्व (गूं) शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

पुष्पांजलि :

दोनों हाथों में पुष्प ले लें–

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे, स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रणाय महाराजय नमः।

ॐ तत् ब्रह्म, ॐ तत् वायु, ॐ तदात्मा, ॐ तत् सत्यम्,
ॐ तत्सर्वम्, ॐ तत्पुरोर्नमः।

पुष्पांजलिं गृहाणेमां परब्रह्म स्वरूपिणि।
भक्त्या समर्पितं देवि! प्रसन्ना भव सर्वदा।।

हाथ में लिए पुष्प को लक्ष्मी के चित्र पर चढ़ा दें।

स्तुति :

दोनों हाथ जोड़कर पूर्ण भक्ति-भाव से देवी की स्तुति करें–

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु नारायणयवल्लभायै।
नमोऽस्तु रत्नाकर संभवायै नमोऽस्तु लक्ष्म्यै जगतां जनन्यै।।

पद्मासने पद्करे सर्वलोकैक पूजिते।
नारायण प्रिये देवि! सुप्रीता भव सर्वदा।।

श्री महालक्ष्म्यै नमः नमस्करोमि।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

विशेषार्घ्य :

दूध में सुगन्धित द्रव्य (चन्दन या कुंकुम) तथा पुष्प मिलाकर अर्घ्य दें—

गोक्षीरेण युतं देवि! गन्ध पुष्प समन्वितम्।
अर्घ्यं गृहाण वरदे! वरलक्ष्मि! नमोऽस्तुते।।

अनया पूजया श्री महालक्ष्मी देवता प्रीयन्ताम्।
ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु।।

विनियोग, न्यास, ध्यान तथा आवरण पूजा हेतु महालक्ष्मी यंत्र को अपने सामने किसी पात्र में स्थापित कर दें एवं धूप, दीप जला कर पूजन प्रारम्भ करें—

विनियोग :

दायें हाथ में जल लेकर उसमें अक्षत व पुष्प रख लें—

ॐ अस्य मंत्रस्य भृगुऋषिः, निवृतच्छन्दः श्री महालक्ष्मी देवता मम सकलैश्वर्य लाभाय विनियोगः।

जल भूमि पर या किसी पात्र में छोड़ दें।

न्यास :

दैवी शक्ति को अपने समस्त अंगों में स्थापित करने हेतु न्यास किया जाता है। सर्वप्रथम ऋष्यादि न्यास, कर न्यास फिर अंग न्यास सम्पन्न करें—

ऋष्यादि न्यास

भृगु ऋषये नमः शिरसि।
निवृतच्छन्दसे नमः मुखे।
श्री लक्ष्मी देवतायै नमः हृदि।
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

कर न्यास

ॐ श्रां अंगुष्टाभ्यां नमः।
ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ श्रः करतलकर पृष्टाभ्यां नमः।

अंग न्यास

ॐ श्रां हृदयाय नमः।
ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ श्रूं शिखायै वषट्।
ॐ श्रैं कवचाय हुम्।
ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ श्रः अस्त्राय फट्।

ध्यान :

दोनों हाथ जोड़कर भक्ति-भाव से लक्ष्मी के दिव्य स्वरूप का ध्यान करें–

ॐ कान्त्या काञ्चन सन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।
हस्तोत्क्षिप्त हिरण्मयामृतघटै रासिच्यमानां श्रियम्।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां
क्षौमाबद्ध नितम्ब बिम्बलसितां वन्देऽरविन्द स्थितां।।

पीठ पूजा :

ध्यान के पश्चात् यंत्र पर अक्षत चढ़ाते हुए नव शक्तियों का पूर्वादि क्रम से पूजन करें–

ॐ विभूत्यै नमः।
ॐ कान्त्यै नमः।
ॐ कीर्त्यै नमः।
ॐ पुष्ट्यै नमः।
ॐ ऋद्ध्यै नमः।
ॐ उन्मन्यै नमः।
ॐ सृष्ट्यै नमः।
ॐ सन्मत्यै नमः।
ॐ उत्कृष्ट्यै नमः।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

प्रथमावरण पूजा :

भक्ति-भाव युक्त हृदय से महालक्ष्मी को नमन कर उनसे आवरण पूजा करने की अनुमति मांगें। तत्पश्चात् अपने बायें हाथ में हल्दी से रंगे अक्षत लेकर दाहिने हाथ से यंत्र पर अर्पित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें–

ॐ हिरण्यगर्भायै नमः।
ॐ पद्मासनस्थायै नमः।
ॐ नारायणप्रियायै नमः।
ॐ मंगलदेवतायै नमः।
ॐ कमलालयायै नमः।
ॐ सरोजहस्तायै नमः।

इसके बाद पुष्पांजलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें–

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

द्वितीयावरण पूजा :

यंत्र पर पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण कर द्वादश देवताओं का पूजन करें–

ॐ वासुदेवाय नमः।
वासुदेव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ संकर्षणाय नमः।
संकर्षण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ प्रद्युम्नाय नमः।
प्रद्युम्न श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ अनिरुद्धाय नमः।
अनिरुद्ध श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ दमकाय नमः।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

दमक श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ सलिलाय नमः।

सलिल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ गुग्गुलाय नमः।

गुग्गुल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ करूंटकाय नमः।

करूंटक श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ शंखनिधये नमः।

शंखनिधि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ वसुधायै नमः।

वसुधा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ पद्मनिधये नमः।

पद्मनिधि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ वसुमत्यै नमः।

वसुमति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पुष्पांजलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

तृतीयावरण पूजा :

अपने बायें हाथ में आठ कमल पुष्प अथवा आठ कमल बीज लेकर मंत्रोच्चार करते हुए, यंत्र पर अर्पित करते हुए अष्ट देवियों की पूजा करें—

ॐ बलाक्यै नमः।

बलाकी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

ॐ विमलायै नमः।

विमला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ कमलायै नमः।

कमला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ वनमालिकायै नमः।

वनमालिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ विभीषिकायै नमः।

विभीषिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ भालिकायै नमः।

भालिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ शांकार्यै नमः।

शांकारी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ वसुमालिकायै नमः।

वसुमालिका श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पुष्पांजलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

पुष्प को यंत्र पर चढ़ावें।

चतुर्थावरण पूजा :

अपने बायें हाथ में पुष्प की पंखुड़ियां तथा अक्षत लेकर यंत्र पर अर्पित करते हुए दस दिक्पाल पूजन सम्पन्न करें—

ॐ लं इन्द्राय नमः। ॐ रं अग्नये नमः।

ॐ मं यमाय नमः। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः।

ॐ वं वरुणाय नमः। ॐ यं वायवे नमः।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

ॐ कुं कुबेराय नमः। ॐ हं ईशानाय नमः।
ॐ आं ब्रह्मणे नमः। ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः।

हाथ में पुष्पांजलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यंत्र पर चढ़ायें –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

पुष्प को यंत्र पर चढ़ावें।

पंचमावरण पूजा :

बायें हाथ में कुंकुम से रंगे अक्षत लेकर दायें हाथ से यंत्र पर अर्पित करते हुए देवी के हाथों में सुशोभित अस्त्रों का पूजन करें –

ॐ वं वज्राय नमः। ॐ शं शक्तये नमः।
ॐ दं दण्डाय नमः। ॐ खं खड्गाय नमः।
ॐ पां पाशाय नमः। ॐ अं अंकुशाय नमः।
ॐ गं गदायै नमः। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः।
ॐ पं पद्माय नमः। ॐ चं चक्राय नमः।

हाथ में पुष्पांजलि लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यंत्र पर चढ़ायें –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्।।

पुष्प को यंत्र पर चढ़ावें। आवरण पूजा के पश्चात् "स्फटिक माला" से मूल मंत्र की पांच माला जप सम्पन्न करें –

मंत्र

।। ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं।।

मंत्र-जप के पश्चात् विनम्र भाव से भगवती लक्ष्मी को प्रणाम कर

Download Book ~ https://www.hindibook.in

अपनी मनोकामना को अतिशीघ्र पूर्ण करने की प्रार्थना करें तथा निम्न "श्री लक्ष्मी स्तोत्र" का पाठ करें –

श्री लक्ष्मी स्तोत्रम्

त्रैलोक्यपूजिते देवि! कमले विष्णुवल्लभे।
यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा।।
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया।
पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्रीः पद्मधारिणी।।
द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पटेत्।
स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह।।

स्तोत्र पाठ के बाद पुनः महालक्ष्मी को प्रणाम करें तथा देवी को चढ़ाया गया नैवेद्य पूरे परिवार में वितरित करें।

इस प्रकार पूजन सम्पन्न करने वाले साधक की दरिद्रता समाप्त होती है तथा विपुल धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

।।इति सिद्धिम्।।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

श्री महालक्ष्म्यष्टक स्तवः

इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि! नमोऽस्तु ते ।।
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि ।
सर्वपापहरे देवि! महालक्ष्मि! नमोऽस्तु ते ।।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि ।
सर्वदुःखहरे देवि! महालक्ष्मि! नमोऽस्तु ते ।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि! भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मंत्रमूर्ते सदा देवि! महालक्ष्मि! नमोऽस्तु ते ।।
आद्यन्तरहिते देवि! आद्यशक्ति महेश्वरि ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि! नमोऽस्तु ते ।।
स्थूलसूक्ष्महरे रौद्रे महाशक्ति महोदरे ।
महापापहरे देवि! महालक्ष्मि! नमोऽस्तुते ।।
पद्मासनस्थिते देवि! परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि! नमोऽस्तु ते ।।
श्वेताम्बरधरे देवि! नानालङ्कारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि! नमोऽस्तु ते ।।
महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ।।
एककालं पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ।।
त्रिकलं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ।।

।।इति इन्द्र कृतः महालक्ष्म्यष्टकस्तवः सम्पूर्णः।।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

श्री लक्ष्मी सूक्तं

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरां शुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्।
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ।।
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमनो मह्यं ददातु सोमिनः।।
न क्रोधो न च मात्सर्य न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृत पुण्यानां भक्तानां सूक्तजापिनाम्।।
पद्मानने पद्मऊरु पद्माक्षि पद्सम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्।।
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माध्वप्रियाम्।
विष्णुप्रियां सखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम्।।
महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचयोदयात्।
पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्व-प्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व।।
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयः श्रियपुत्राश्च मय श्रीर्देवी देवता।।
ऋणरोगादिदारिद्र्यं पापञ्च अपमृत्यवः।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।
श्रीर्वचस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।

।।इति श्री लक्ष्मी सूक्तम्।।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की

आजीवन सदस्यता

सुखद जीवन का एहसास, इस जीवन का सौभाग्य एवं गौरव,
आजीवन सदस्यता लेने पर आपको दिया जायेगा

सर्वथा मुफ्त उपहार

१. समस्त क्रियाओं में सहायक तेजस्वी ''पारद शिवलिंग'' उपहार स्वरूप
२. ''सिद्धाश्रम'' ऑडियो कैसेट, जो आपके घर को मधुर व पवित्र वाणी से शुद्ध, चैतन्य कर देगी
३. प्राण-प्रतिष्ठित ''गुरु यंत्र''
४. प्रथम साधना शिविर में ''शिविर सिद्धि पैकेट'' मुफ्त
५. पूरे समय पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर डाक द्वारा
६. अद्वितीय भाग्योदय के लिए ''सूर्यकान्त उपरत्न''
७. प्राणश्चेतना युक्त ''पूज्य गुरुदेव का आकर्षक चित्र''
८. सदस्य बनने के दो माह के भीतर ''चैतन्य महालक्ष्मी दीक्षा''

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान मात्र एक पत्रिका ही नहीं है, एक रचनात्मक आन्दोलन और ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों को आगे बढ़ाना भी है और पूज्य गुरुदेव के समक्ष अपनी शिष्यता को स्पष्ट करना भी है।

केवल **7777/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो, तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी है।

नोट – बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल 3000/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर (राज.),
फोन : 0291-32209
फेक्स : 0291-32010

सिद्धाश्रम,
306, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, दिल्ली,
फोन : 011-7182248,
फेक्स: 011-7196700

Download Book ~ https://www.hindibook.in

झीनी झीनी झरत फुहार

पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी की पावन वाणी में सारगर्भित दुर्लभ ऑडियो कैसेट्स

गुरु-शिष्य

- गुरु गति पार लगावे
- गुरुर्बिना गतिर्नास्ति
- गुरु हमारो गौत्र है
- सांस-सांस में गुरु बसे
- मैं खो गया, तुम भी खो जाओ

ध्यान एवं योग

- ध्यान योग
- कुण्डलिनी योग
- ध्यान धारणा और समाधि
- समाधि के सात द्वार
- कुण्डलिनी नाद ब्रह्म

प्रेम

- प्रेम गली अति सांकरी
- प्रेम धार तलवार की
- अकथ कहानी प्रीत की
- प्यार के घुंघरुओं की खनक
- सूली ऊपर सेज पिया की

साधनाएं

- विशेष लामा मंत्र
- अमोघ साबर साधनाएं
- बगलामुखी प्रयोग
- ॐ मणि पद्मे हुं
- विश्व की श्रेष्ठतम साधनाएं

अप्सरा सम्बन्धी प्रयोग

- नाभिदर्शना अप्सरा प्रयोग
- षोडश अप्सरा प्रयोग
- पुष्पदेहा अप्सरा प्रयोग
- स्वर्ण देहा अप्सरा प्रयोग भाग - 1
- स्वर्ण देहा अप्सरा प्रयोग भाग - 2

स्तोत्र एवं स्तवन

- निखिलेश्वरानन्द स्तवन
- प्रात:कालीन गुंजरित वेद ध्वनि
- गुरु गीता
- गुरुमुख स्तोत्र
- दैनिक साधना विधि

✤ आपके लिए प्रत्येक पैकेट में पांच-पांच कैसेट्स हैं, निर्दोष, शुद्ध, पवित्र एवं नवीन टेक्नोलॉजी से संचयित। ✤ एक पैकेट में पांच कैसेट्स की न्यौछावर 30 X 5 = 150/- होती है, परन्तु एक कैसेट पर 5/- की छूट की दर से 125/- में दिया जायेगा। ✤ इसके लिए आदेश के साथ धनराशि ड्राफ्ट या मनीआर्डर से अग्रिम भेजें। ✤ डाक व्यय अतिरिक्त।

: सम्पर्क :

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, फैक्स : 011-7196700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०),

Download Book ~ https://www.hindibook.in

जीवन के सर्वतोन्मुखी विकास के लिए पढ़ें

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

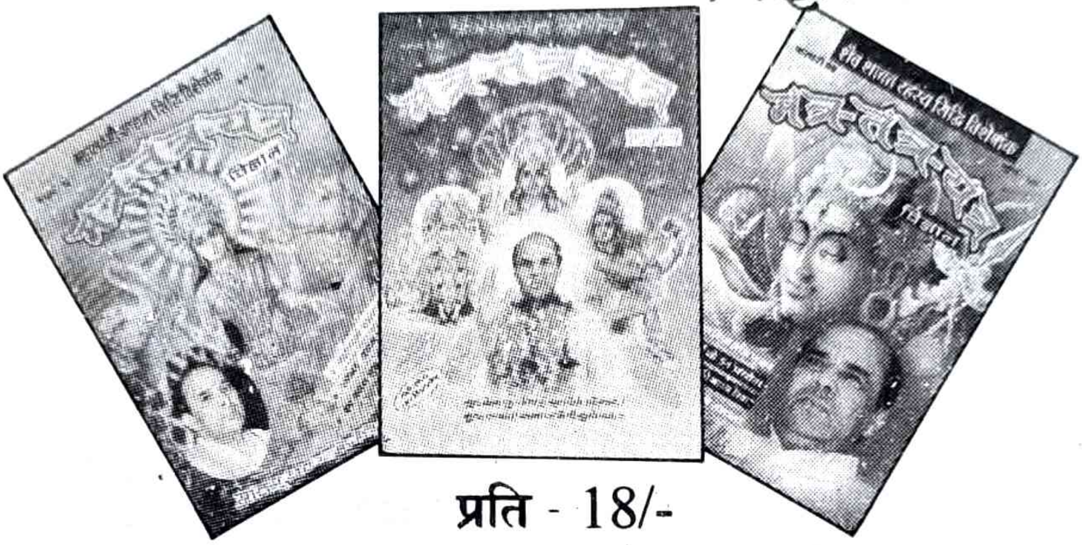

प्रति - 18/-

एक हिन्दी मासिक पत्रिका, जो आप को देगी प्रति माह

- **नवीन ज्ञान**
- **नई साधनाएं**
- **आयुर्वेद**
- **ज्योतिष**
- **कुण्डलिनी जागरण**
- **योग**

. . . जीवन में उन्नति के सभी क्षेत्रों को अपने में समेटती हुई। सभी आकर्षणों से युक्त और वार्षिक सदस्य बनने पर आपको देगी मुफ्त उपहार –

"प्राण-प्रतिष्ठित महालक्ष्मी यंत्र" ('२ × २') ताम्रपत्र पर

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका नियमों के अन्तर्गत

वार्षिक सदस्यता शुल्क – 225/- डाक व्यय सहित

भारत के समस्त बुक स्टॉलों पर उपलब्ध, न मिलने पर लिखें

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्टकॉलोनी, जोधपुर फोनः 0291-432209, फैक्स0291-432010

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली फोनः 011-7182248, फैक्सः 011-7196700

Download Book ~ https://www.hindibook.in

✧ काल भैरव सिद्धि

✧ षोडशी त्रिपुर सुन्दरी प्रयोग

✧ अनंग सिद्धि प्रयोग

✧ महाकाल प्रयोग

✧ नाभिदर्शना अप्सरा प्रयोग

✧ गणपति एवं मनोकामना पूर्ति प्रयोग

✧ धनदा यक्षिणी प्रयोग

✧ अकाल मृत्यु मुक्ति एवं पूर्ण प्रेम प्राप्ति अप्सरा प्रयोग

✧ सम्मोहन-वशीकरणा एवं तृतीय ✧ नेत्र जागरण प्रयोग

✧ शाप विमोचनी एवं साधना साफल्य प्रयोग

✧ मनः शक्ति जागरण एवं भैरव-भैरवी प्रयोग

गुरु वाणी श्रृंखला

✧ गुरु वाणी

✧ गुरु बिन रह्यो न जाय

✧ गुरु हमारी जाति है

✧ सांस-सांस में गुरु बसे

✧ गुरु-शिष्य : सफलता की पूर्णता

✧ सिद्धि और सफलता

✧ शिष्यता : जीवन सौन्दर्य

✧ गुरुः जीवन का महोत्सव

✧ गुरु साधना : सफलता का मूल रहस्य

✧ चहुं दिस गुरु सुगन्ध व्यापी रे

✧ अज्ञात रहस्यों का सुनहरा प्रभात

भजन संग्रह

✧ भजन सौरभ

✧ संगीत सरिता

✧ प्रीत पायल

✧ बाजे कण-कण में प्रेम बांसुरिया

✧ जब उड़े प्रेम गुलाल

✧ कान्हा

✧ भजन सागर

✧ भजन प्रभात

✧ भजन कुछ कर ले

✧ भजन मंच

✧ गुरु महिमा

✧ भजन दरबार

विविध

✧ स्वामी सच्चिदानन्द

✧ सिद्धाश्रम

✧ सिद्धाश्रम महात्म्य

✧ सिद्धाश्रम प्रश्नोत्तर

✧ गुरु हमारो गोत्र है

✧ गुरु गति पार लगावे

✧ काहि विधि करूं उपासना

✧ मैं खो गया तुम भी खो जाओ

✧ मैं अपना पूर्व जीवन देख रहा हूं

✧ हिप्नोटिज्म रहस्य

✧ परा विज्ञान

✧ पारद विज्ञान

✧ शिव सूत्र

S एस-सीरीज

✧ न्यौछावर प्रति कैसेट - ३०/-

:: सम्पर्क इस पते पर करें ::

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट, कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

Download Book ~ https://www.hindibook.in

जब सम्पूर्ण जीवन नृत्यमय हो जाता है

जीवन के ऊर्ध्वगामी विकास में सहायक पूज्य गुरुदेव की वाणी में ये नवीनतम ऑडियो कैसेट्स

शिव सूत्र
पराविज्ञान
शिव पूजन
संध्या आरती
पारद विज्ञान
पूर्णत्व सिद्धि
राजयोग सिद्धि
निखिल स्तवन
चामुण्डा प्रयोग
कूष्माण्ड प्रयोग
महाकाली प्रयोग
महालक्ष्मी प्रयोग
कात्यायनी प्रयोग
दुर्लभ गुरु भजन
कालज्ञान विवरण

गुरु वाणी
ध्यान योग
साधना सूत्र
अष्ट सिद्धि
कायाकल्प
तंत्र रहस्य
कुण्डलिनी योग
ॐ मणि पद्मे हुं
कालज्ञान प्रयोग
लक्ष्मी मेरी चेरी
महालक्ष्मी साधना
हिप्नोटिज्म रहस्य
पूर्णत्व ब्रह्म दीक्षा
अक्षय पात्र साधना
षोडशी त्रिपुर साधना

गुरु हमारी जाति है
तारा महाविद्या प्रयोग
सांस-सांस में गुरु बसे
गुरु बिन रह्यो न जाय
पारदेश्वर लक्ष्मी प्रयोग
गुरु हृदय स्थापन प्रयोग
पूर्ण पौरुष प्राप्ति प्रयोग
ध्यान, धारणा और समाधि
मैं खो गया तुम भी खो जाओ
पाशुपतास्त्रेय प्रयोग (३ भाग)
सशरीर सिद्धाश्रम प्राप्ति प्रयोग

ऑडियो कैसेट प्रति – 30/-
(डाक व्यय 30/- अतिरिक्त)

10 कैसेटस से अधिक कैसेट्स मंगाने पर डाक व्यय संस्था वहन करेगी।

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्रविज्ञान, डॉ. श्रीमालीमार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर; फोन0291-432209, फैक्स0291-432010
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नईदिल्ली; फोन011-7182248, टेलिफैक्स011-7196700

Download Book ~ https://www.hindibook.in